Purnea University Purnea

Department of philosophy

PhD course work

Subjec - Comparative Religion (PPHIL-607)

(Unit-3,)

LACTURE .3

Date – 17/04/2020

Dr. Anita Mahto

Associate professor

HOD P.G department of Philosoph

Purnea college Purnea

Scanned by CamScanner

CAN THIS BE RELIGION WITHOUT GOD ?
EXPLAIN WITH REFRENCE TO BUDDHISM &JAINISM ?

Scanned by CamScanner

Ans:→ बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध माने जाते हैं। ग्रीक दार्शनिक सुकरात और चीनी दार्शनिक Confucious के समान बुद्ध ने कोई पुस्तक नहीं लिखा है। उनके उपदेश मौखिक होते थे और उन्हीं उपदेशों से उनके उनके दार्शनिक, धार्मिक और नैतिक विचार निकाले गए हैं। बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने बुद्ध के उपदेशों का संग्रह 'त्रिपिटक' में किया। 'त्रिपिटक' प्रारंभिक बौद्ध धर्म का मूल और प्रमाणिक आधार कहा जा सकता है। 'त्रिपिटक' की रचना पाली साहित्य में हुई है।

धर्म का सबसे प्रधान तथ्य किसी ईश्वर पर विश्वास करना होता है। ईश्वर के अभाव में धर्म का कोई महत्व नहीं रह जाता है। धार्मिक चेतना की माँग है कि एक शक्तिशाली ईश्वर हो, जिसके प्रति व्यक्ति धार्मिक अनुभूतियों को व्यक्त कर सके। धार्मिक चेतना का विकास उस समय तक आरंभ हो जबतक हम किसी ईश्वर को स्थापित नहीं कर लें। प्राचीन धर्म तबतक धर्म के नाम से नहीं पुकारा जा सकता है जबतक कि उसका कोई ईश्वर न हो। बिना ईश्वर को माने धर्म की धारणा खोखली और अर्थहीन है, ईश्वर धर्म का प्राण है, उसकी आत्मा है। धर्म के इस परिवेश में बौद्ध धर्म में ईश्वर संबंधी विचार का अध्ययन अनिवार्य प्रतीत होता है। किन्तु बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है, जिसमें ईश्वर की सत्ता का निषेध किया गया है। इसलिए यह एक अनीश्वरवादी धर्म के रूप में धर्मग्रंथों में वर्णित है।

"Buddhism in observe to the idea of God in a theological, teliological or Metaphysical sense. God, whether He concieved as a personal creator and controller, a moral governer and disponser of justic or as an indwelling principle in man know as the self is unacceptable to Buddha. (Buddhism and Bhagwat Gita P-390)

साधारणतः ईश्वर संसार का स्रष्टा, संचालक और रक्षक माना जाता है जिसपर मानव अपनी सुरक्षा के लिए निर्भर करता है किन्तु बौद्ध दर्शन में ईश्वर के अस्तित्व का निषेध करते हुए कहा गया है कि यदि हम स्वीकार कर लें कि ईश्वर विश्व का रचयिता और संचालक है तो नैतिकता का कोई स्थान नहीं रह जाता क्योंकि ऐसी हालत में मानव स्वयं अपनी क्रियाओं का संचालक हो जाता है। मानव को उन क्रियाओं का उत्तरदायी न होना

स्वतंत्र अस्तित्व का संचालक है। अतः इस परिस्थिति में नैतिकता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है।

इसके अतिरिक्त यदि ईश्वर का अस्तित्व है और उसे ही संसार का कारण माना जाय तो प्रश्न उठता है कि अशुभ का क्या अस्तित्व है। सांसारिक अशुभ ईश्वर के अस्तित्व का पूर्ण खंडन कर देते हैं। क्या हम यह स्वीकार कर लें कि ईश्वर विश्व में वर्तमान अशुभों का कारण नहीं था इन अशुभों को दूर करने में असमर्थ है? किन्तु इन दोनों संभावनाओं में से किसी को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। सर्वप्रथम हम इस बात को नहीं मानते कि ईश्वर अशुभों का कारण है। वह ईश्वर जिसमें सभी अच्छे गुणों का योग माना गया है किस प्रकार अशुभों को जन्म देगा। पुनः यदि ऐसा मान लिया जाय कि ईश्वर इन अशुभों को दूर करने में असमर्थ है तो यह भी गलत होगा क्योंकि ऐसी स्थिति में वह सर्वशक्तिमान नहीं रह जाता है फिर भी यदि हम यह कहें कि वह अशुभों को दूर करने में असमर्थ है तो इसका अर्थ होगा कि वह सक्षम है जो वह नहीं है। इन्हीं तर्कों द्वारा बौद्ध धर्म बतलाते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। ईश्वर की सत्ता मानना एक भूल है।

बौद्ध धर्म ईश्वर का खंडन करते हुए यह भी कहते हैं कि क्यों हम ईश्वर को विश्व का कारण मानें। क्या विश्व रचना के पीछे ईश्वर का कोई प्रयोजन है? यदि प्रयोजन नहीं है तो ईश्वर को विश्व का कारण नहीं माना जा सकता है। यदि यह स्वीकार किया जाय कि ईश्वर के अन्दर विश्व के निर्माण के पीछे कोई प्रयोजन है तो इसका अर्थ है कि ईश्वर पूर्ण नहीं है। उसमें इच्छाएँ हैं जिसके कारण वे विश्व का निर्माण करते हैं। इच्छाएँ सीमित सत्ताओं में भी संभव है। ईश्वर जिसे पूर्णता का प्रतीक माना जाता है उसमें किसी प्रकार की इच्छा का अभाव है। इस तरह बौद्ध धर्म एक सुन्दर तर्क के आधार पर ईश्वर के अस्तित्व का खंडन करता है। इसके अनुसार ईश्वर भ्रम है और उसकी कोई वास्तविक सत्ता नहीं है।

इतना होते हुए भी बौद्ध धर्म का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि आगे चलकर बुद्ध को ही ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। इसका कारण यह है कि अनीश्वरवादी धर्म मानव की धार्मिक भावना की संतुष्टि करने में असमर्थ है। अतः जो धर्म अनीश्वरवादी प्रतीत होता है वह भी किसी न किसी रूप में ईश्वर को मान लेता है। यही कारण है कि बौद्ध धर्म को भी

Scanned by CamScanner

में की पोथि में समेट लिया गया है। आज भी बुद्ध की प्रतिमायें तथा धार्मिक स्तम्भ अनेक जगहों में उपलब्ध हैं जहाँ बौद्ध धर्मावलम्बी उसकी पूजा अर्चना करते हैं। ऐसी स्थिति में बौद्ध धर्म भी धर्म की कोटि में रखा जा सकता है। बौद्ध धर्म तीन महानतम धर्मों में से एक है। इसके मानने वालों की संख्या संपूर्ण विश्व में उपलब्ध हैं। इसे विश्व धर्म कहा जाता है। ऐसी स्थिति में बौद्ध धर्म को धर्म नहीं कहना भूल होगा। यह भी एक धर्म है और स्वयं महात्मा बुद्ध उपासना का विषय हैं जिन्हें ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

जैन धर्म में ईश्वर नामक सत्ता का पूर्ण अभाव है। जैन इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए जरा भी तैयार नहीं हैं कि विश्व में ईश्वर नाम की किसी भी सत्ता का कोई अस्तित्व है और ईश्वर इस विश्व का तथा विश्व की सारी वस्तुओं का स्रष्टा और संचालक हैं। जैन धर्म के अनुसार मानव प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिससे परे दूसरी किसी महान् एवं श्रेष्ठ सत्ता का कोई अस्तित्व नहीं माना जा सकता है। इसलिए यह कहना कि मानव की रचना ईश्वर ने की है, एक भूल हैं। इससे भिन्न सत्य तो यह है कि मानव तथा विश्व या विश्व की हर वस्तुओं का समाज कारण द्रव्य है, जिसकी संख्या जैनियों के अनुसार छः हैं:— (i) देश, (ii) काल, (iii) भूत (Matter), (iv) जीव (Soul), (v) क्रिया (action), तथा (vi) अक्रिया (Inaction)।

इन्हीं छः द्रव्यों के संयोग और सम्मिश्रण से विश्व की हर वस्तुओं की उत्पत्ति हुई है। यदि एक बीज से किसी वृक्ष का विकास होता है तो उसका कारण ईश्वर को नहीं माना जा सकता है क्योंकि बीज पहले से वृक्ष में अव्यक्त रूप से मौजूद रहता है। बीज से वृक्ष का विकास ईश्वर ने नहीं किया बल्कि यह उस विशेष समय, स्थान, वातावरण आदि का फल है जिसमें बीज को रखा गया था। इन आवश्यक तत्वों के कारण ही बीज ने वृक्ष की उत्पत्ति की है। इस प्रकार जैन धर्म के अनुसार ईश्वर विकास का कारण नहीं माना जा सकता है। ईश्वर एक अवास्तविक सत्ता है।

किन्तु ईश्वर के खंडन के बाद भी जैन धर्म ऐसी शक्ति या सत्ता को अवश्य मानता है जिसे वह सर्वशक्तिमान कहता है। इनके अनुसार ईश्वर का पूर्ण अभाव है किन्तु निश्चय ही ऐसी शक्ति है जो सर्वव्याप्त है और वह सर्वशक्तिमान सत्ता भी है।

Scanned by CamScanner

जैन धर्म के अनुसार सिद्ध जीव (liberated soul) ही पूजा का विषय है। सांसारिक विषय वस्तुओं, राग-द्वेष, जन्म-मरण आदि पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर ली है। वह कर्मों के बंधन से पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। इसी सत्ता को जैन धर्म ईश्वर का रूप देता है और बताता है कि वही एकमात्र ऐसी सत्ता है जो पूजा के विषय के रूप में माना जा सकता है। वही इनके अनुसार ईश्वर है और उससे परे किसी महान् सत्ता का अस्तित्व नहीं है। जैन धर्म के अनुसार "He who is Omnipotent, free from all love of the world and from all failing, he who is worshipped by three world and who explains the inner meaning (of religion) as it exists, this adorable deity is the great God." (quoted from Glimpse of world history P-107) (जो सर्वज्ञाता है, सांसारिक प्रेम तथा असफलता से मुक्त है, तीनों लोकों द्वारा पूजित है और अपनी आन्तरिक व्याख्या वास्तविक रूप में कर सकता है, वही धर्म के लिए महान् ईश्वर है) जिसने सभी कर्मों का त्यागकर दिया है तथा सांसारिक बंधनों से मुक्ति प्राप्त कर चुका है ऐसा जीव ही ईश्वर है। तीर्थंकर ऐसे जीवों में से है, अतः वे ही पूजा के विषय हैं क्योंकि उनमें ईश्वर के सभी गुण मौजूद हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यद्यपि सैद्धान्तिक रूप से जैन धर्म में ईश्वर का खंडन हुआ है फिर भी व्यावहारिक रूप से जैन धर्म ईश्वर के स्थान पर तीर्थंकरों को मानता है। तीर्थंकर मुक्त होते हैं और उनमें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त आनन्द निवास करते हैं।

जैन धर्म में पंच परमेष्टि को माना गया है। अर्हत, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय एवं साधु जैनियों का पंचपरमेष्टि है। तीर्थंकरों और जैनियों के बीच निकटता का संबंध है। वे उनकी आराधना करते हैं। तीर्थंकरों के प्रति भक्ति का प्रदर्शन करते हैं। जैनलोग महात्माओं की पूजा बड़ी धूमधाम से करते हैं। वे उनकी मूर्ति बनाकर पूजते हैं। पूजा, प्रार्थना, श्रद्धा और भक्ति में जैनियों का अकाट्य विश्वास है। जैनी तीर्थंकरों को ईश्वर मानते हैं, जीवों को उपासक तथा ध्यान, श्रद्धा, भक्ति को उपासना का तत्व मानते हैं। प्रत्येक जैनियों का यह विश्वास है कि तीर्थंकरों के बताये हुए मार्ग पर चलकर प्रत्येक व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार जैन धर्म आशावाद से ओतप्रोत है।

धर्म का केन्द्र ईश्वर होता है और जैनियों ने तीर्थंकरों को ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया है इसलिए जैन धर्म को धर्म की कोटि में गिना जाता है। यह ठीक है कि जैन वैसे ईश्वर में विश्वास नहीं करता है जो विश्व से परे या अमूर्त है, किन्तु इतना तो निश्चित है कि धर्म के सभी

Scanned by CamScanner

संतों को तीर्थंकरों में प्रतिष्ठित करके उसे ईश्वर का प्रतिनिधि मान लेता है। इसलिए जैन धर्म को भी ईश्वर की कोटि में रखा जाता है।

Scanned by CamScanner